स्वाद के लिए जिह्वा, स्पर्श के लिए त्वचा। इस प्रकार ये सभी आत्मस्वरूप के बाहर क्रियाशील हैं। ये सब प्राणवायु के कार्य हैं। अपानवायु अधोगामी है, व्यानवायु प्रसरण-संकुचन करती है, समानवायु समता बनाये रखती है और उदानवायु ऊर्ध्वगामिनी है। प्रबुद्ध मनुष्य इन सबको आत्मतत्त्व की जिज्ञासा में लगाता है।

४/५

द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञा योगयज्ञास्तथापरे।
स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्च यतयः संशितव्रताः।।२८।।

द्रव्ययज्ञाः=अपनी सम्पत्ति का यजन; **तपोयज्ञाः**=तप द्वारा यजन; **योगयज्ञाः**=अष्टांगयोग द्वारा यज्ञ; **तथा**=इस प्रकार; **अपरे**=दूसरे; **स्वाध्याय**=वेदाध्ययन रूपी यज्ञ; **ज्ञानयज्ञाः**=दिव्य ज्ञान का अनुशीलन रूप यज्ञ; **च**=भी; **यतयः**=प्रबुद्ध; **संशितव्रताः**=दृढ़ व्रतधारी।

अनुवाद

दूसरे मनुष्य कठोर तप में अपनी सम्पत्ति का त्याग करने से प्रबुद्ध होकर दृढ़ व्रत धारण कर के अष्टांगयोग का अभ्यास करते हैं, जबकि और दूसरे ज्ञानप्राप्ति के लिए वेद का स्वाध्याय करते हैं।।२८।।

तात्पर्य

यहाँ कहे गये यज्ञों के नाना अवान्तर भेद किये जा सकते हैं। बहुत से मनुष्य विविध प्रकार से दान के रूप में अपनी सम्पत्ति का यजन करते हैं। धनाढ्य व्यापारी वर्ग अथवा राजवंश द्वारा धर्मशाला, अन्नक्षेत्र, अतिथिशाला, अनाथालय, विद्यापीठ, आदि दातव्य संस्थाओं की स्थापना की जाती है। अन्य देशों में भी प्रचुर संख्या में चिकित्सालय, वृद्धगृह एवं अन्यान्य दातव्य संस्थान हैं, जिनका उद्देश्य दरिद्रों में अन्न, शिक्षा, औषधियों का निःशुल्क वितरण करना है। ये सब दानकर्म द्रव्यमय यज्ञ हैं। दूसरे संसार में पदोन्नति अथवा स्वर्गारोहण के निमित्त से चन्द्रायण तथा चातुर्मास्य आदि कठोर तपों का स्वेच्छा से पुरश्चरण करते हैं। इन पद्धतियों के अन्तर्गत जीवन भर कुछ नियमों के पालन का दृढ़ व्रत धारण करना पड़ता है। उदाहरणस्वरूप, चातुर्मास्य का व्रती चार मास तक क्षौर नहीं करता, निषिद्ध पदार्थ नहीं खाता, दिन में दो बार भोजन नहीं करता और गृह में ही निवास करता है। सांसारिक सुखों को इस विधि से त्यागना 'तपोयज्ञ' है। इसके अतिरिक्त, कुछ दूसरे मनुष्य (ब्रह्मैक्य के लिए) पातंजलयोग, हठयोग और (अभीष्टसिद्धि के लिए) अष्टांगयोग आदि में प्रवृत रहते हैं। कुछ सम्पूर्ण पवित्र तीर्थों की यात्रा करते हैं। ये सब क्रियाएँ 'योगयज्ञ' हैं। ऐसे भी मनुष्य हैं जो विविध वैदिक शास्त्रों का, विशेष रूप से उपनिषद्, वेदान्तसूत्र अथवा सांख्यदर्शन का अध्ययन करते हैं। ये कर्म 'स्वाध्याय-यज्ञ' हैं। नाना प्रकार के यज्ञों में श्रद्धापूर्वक लगे हुए ये सभी योगी उदात्त जीवन के अभिलाषी हैं; परन्तु कृष्णभावनामृत इन सबसे विलक्षण है, क्योंकि वह साक्षात् परम रसमयी भगवत्सेवा है। श्रीभगवान्